प्रश्न -④ रीतिकालीन काव्य की सामान्य प्रवृत्तियाँ :

उत्तर - ④ आश्रयदाताओं की प्रशंसा :- रीतिकाल के अधिकांश कवि विभिन्न राजदरबारों के आश्रय में रहते थे। बिहारी, देव, भूषण, सूदन, केशव, मतिराम आदि सभी प्रसिद्ध कवि राजदरबारों से वृत्ति प्राप्त करते थे, अतः यह स्वाभाविक था कि वे अपने आश्रयदाताओं की प्रशंसा में काव्य रचना करते। देव ने अपने आश्रयदाता भवानी सिंह के लिए भवानी विलास तथा कुशल सिंह के लिए कुशल विलास की रचना की, तो सूदन ने भरतपुर के राजा सुजान सिंह की प्रशंसा में सुजान चरित लिखा। वीर ~~सिंह~~ रस के प्रसिद्ध कवि भूषण ने शिवाजी की प्रशंसा में सिवराज भूषण, सिवा बावनी तथा छत्रसाल बुंदेला की प्रशंसा में छत्रसाल दशक की रचना की। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने भूषण की इन रचनाओं की प्रशंसा करते हुए लिखा है — "शिवाजी और छत्रसाल की वीरता के वर्णनों को कोई कवियों की झूठी खुशामद नहीं कह सकता। वे आश्रयदाताओं की प्रशंसा की प्रथा के अनुसरण मात्र नहीं हैं। इन दो वीरों का जिस उत्साह के साथ सारी हिन्दू जनता स्मरण करती है, उसी की व्यंजना भूषण ने की है।" परन्तु यदि भूषण जैसे कुछ कवियों को छोड़ दिया जाए, तो रीतिकाल के अधिकांश कवियों के द्वारा की गई आश्रयदाताओं की प्रशंसा अतिशयोक्तिपूर्ण है। 'उमरदराज महाराज तेरी चाहिए' की

रचनाएँ प्रस्तुत की हैं, उनमें श्रृंगारिकता के साथ-साथ भक्ति भावना भी विद्यमान है। अधिकांश रीति-कवियों ने अपने जीवन के संध्याकाल में भक्ति एवं वैराग्य से ओत-प्रोत रचनाएँ लिखी हैं, ऐसा शायद उन्होंने अपने पाप बोध के कारण किया है।

बिहारी सतसई में लगभग 700 दोहे भक्ति भावना से ओत-प्रोत हैं। एक ऐसा ही भक्तिपरक दोहा प्रस्तुत है जिसमें सांसारिक व्यक्ति को यह उपदेश दिया गया है कि तू विषय-तृष्णा को त्यागकर ईश्वर का गुणगान कर, उसी से तेरा कल्याण होगा —

जम करि मुँह तरहरि पर्‌यौ इहि धरहरि चित लाउ।
विषय तृषा परिहरि अजौं नरहरि के गुन गाउ।

इस सम्बन्ध में डॉ० नगेन्द्र की यह टिप्पणी अत्यन्त सटीक है — "रीतिकाल का कोई भी कवि भक्ति-भावना से हीन नहीं है — हो भी नहीं सकता था, क्योंकि भक्ति उसके लिए मनोवैज्ञानिक आवश्यकता थी। नैतिक रस की उपासना करते हुए उसके विलास जर्जर मन में इतना नैतिक बल नहीं था कि भक्ति रस में अनास्था प्रकट करे अथवा सैद्धान्तिक निषेध कर सके"।

रीतिकालीन कवियों ने राधा-कृष्ण के नाम को आधार बनाकर जो रचनाएँ प्रस्तुत की हैं, उनमें भक्ति-भावना प्रमुख न होकर श्रृंगार-भावना ही प्रमुख है। वस्तुतः उनके हृदय में भक्तिकालीन

P.T.O

कवियों की भाँति राधा-कृष्ण के प्रति श्रद्धा भाव नहीं था क्योंकि वे सामान्य नायक-नायिका के रूप में प्रेम-क्रीड़ाएँ करते हुए चित्रित किये गये हैं। उन्होंने अपनी भक्ति-भावना के सम्बन्ध में स्पष्ट घोषणा करते हुए कहा है —

रीझि हैं सुकवि जो तौं जानों कविताई,
न तौं राधिका-कन्हाई सुमिरन को बहानो है।

रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि बिहारी की काव्य-कृति बिहारी सतसई में लगभग 70 दोहे भक्ति भावना से सम्बन्धित हैं। दरबारी वातावरण के प्रभाव से इन कवियों ने नीति-सम्बन्धी उक्तियों को भी काव्य निबद्ध किया है। बिहारी सतसई में नीति-सम्बन्धी अनेक दोहे उपलब्ध हैं। इसी प्रकार घाघ, बेताल, वृंद, गिरधरदास ने नीति सम्बन्धी काव्य की रचना की है। वृंदसतसई में नीति-सम्बन्धी सुन्दर उक्तियों को काव्य रूप दिया गया है। एक उदाहरण द्रष्टव्य है —

भले बुरे सब एक सम जौं लौं बोलत नाहिं।
जानि परत हैं काग पिक ऋतु बसंत के माहिं॥

(7) नारी के प्रति कामुक दृष्टिकोण : रीतिकालीन काव्य का केन्द्रबिन्दु नारी-चित्रण रहा है। नायिका के नख-शिख चित्रण में उन्होंने अधिक रूचि दिखायी है। नारी के ऐन्द्रिक बाह्य रूप के निरूपण में हीं उनकी वृत्ति अधिक रमी है, उसके आंतरिक गुणों का चित्रण उन्होंने नहीं किया। नारी के विभिन्न अंगों का स्थूल एवं मांसल

चित्र अंकित करते हुए उन्होंने काव्य-रसिकों को उसके मनमोहक स्वरूप से ही परिचित कराया। उनके समक्ष नारी का एक ही रूप था — विलासिनी प्रेमिका का। अतः वे उसके अन्य पक्षों की ओर से नितांत उदासीन रहे। नारी को वे भोग-विलास का उपकरण मात्र समझते थे, अतः ~~उसके अन्य पक्षों की ओर से~~ वे उसके अन्य रूपों — गृहिणी, माता, भगिनी, देवी आदि का चित्रण उन्होंने नहीं किया। नारी के प्रति इस एकांगी दृष्टिकोण के कारण वे नारी जीवन की सामाजिक महत्ता एवं उसकी श्रद्धा समन्वित गौरवमयी मूर्ति को दिखा सकने में सफल नहीं हुए।

रीतिकालीन कवियों ने नारी को कामुक दृष्टि से देखा, इसलिए उनकी वृत्ति नायिका के अंग-प्रत्यंग की शोभा का निरूपण करने में, उसके हाव-भाव का चित्रण करने में और उसकी विलास चेष्टाओं का वर्णन करने में ही अधिक रमी। नारी के प्रति उनका संकुचित दृष्टिकोण तत्कालीन दरबारी वातावरण एवं परिवेश से अनुप्राणित था। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने रीतिकालीन नारी-भावना के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है — "यहाँ नारी कोई व्यक्ति या समाज के संघटन की इकाई नहीं है, बल्कि सब प्रकार की विशेषताओं के बंधन से यथासंभव मुक्त विलास का एक उपकरण मात्र है।"

रीतिकालीन कवि नारी को पुरुष के आकर्षण का केन्द्र एवं उसकी अंकशायिनी मात्र समझते थे। देव कवि की यह उक्ति इस धारणा

के समर्थन में उद्धृत की जा सकती है —

• कौन गनै पुरवन नगर कामिनि एकै रीति।
देखत हरै विवेक कौं चित्त हरै करि प्रीति॥

रीतिकाल के अधिकांश कवियों ने नारी के प्रति इसी दृष्टिकोण पर बल देते हुए उसके रूप के प्रति तीव्र आसक्ति का परिचय दिया है।

पता
डॉ० समदर्शी कुमार
विभाग - हिन्दी (S.R.A.P.C)
मो० नं० - 7909046087
दिनांक - 21-01-2022